मधुबन ओम् शान्ति अंक 298 मई 2017

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(11-04-17)

प्राणप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा परम शिक्षक की शिक्षाओं से अपनी जीवन का श्रृंगार करने वाले, सदा खुश रहने और खुशियों का खजाना बांटने वाले सहजयोगी भव के वरदानी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार – मीठे प्यारे बाबा के सभी बच्चे अव्यक्त पालना की वन्डरफुल अनुभूति करते सदा खुशियों में नाचते, अपनी खुशनुमा जीवन से बापदादा को प्रत्यक्ष करने की सेवायें कर रहे हैं। हम तो मीठे बाबा की कमाल के गीत गाती वाह बाबा वाह! कैसे आप अव्यक्त वतन में रहते इतने सब बच्चों को अपनी ओर आकर्षित करते रहते हो। मधुबन में तो सदा ही बच्चों की महफिल लगी रहती है। देश विदेश से हजारों बाबा के बच्चे आते, ज्ञान रत्नों से अपनी झोली भरकर रिफ्रेश होकर जाते हैं। मीठे बाबा ने हम बच्चों को कदम कदम पर कमाई करना सिखाया है। श्रीमत पर चलने से हम सबकी कितनी अच्छी लाइफ बनी है। हम सब एक के हैं, एक हैं तो कितनी शान्ति है, इसमें खुशी ऐसी है जो व्यर्थ चिंतन से फ्री हो गये हैं। मैं तो समझती हूँ कोई को भी यह चिंतन नहीं होगा कि कल क्या होगा, कैसे होगा! क्योंकि हम जानते हैं कि जो होगा सब अच्छे से अच्छा होगा। बाबा हमारा शिक्षक तो है ही पर साथ-साथ रक्षक भी है। सारी नॉलेज को बाबा कैसे अच्छी तरह से समझा करके हमारे लाइफ की रक्षा कर रहा है।

बाबा ने यह भी सिखाया है कि बच्चे तुम्हें न दु:ख देना है, न दु:ख लेना है। यह भी बड़ा समझदारी का काम है। बस संकल्प है कि मेरी अन्त मती अच्छी हो। जब मैं शरीर छोडूं तो उस घड़ी अपनी देह या कोई भी देहधारी की याद न आये, ऐसी स्थिति के लिये मैं सदा तैयार रहूँ। मुझे अलबेलेपन में टाइम नहीं गंवाना है। कभी जबान पर कडुवापन न आये, यह ध्यान रखना है। बाबा का प्यार कितना न्यारा, कितना प्यारा बना रहा है! वही लाइट हाउस का काम करता है। बाबा का जो मुस्कराना है वो भी दिल को ताकत देता है।

हम सबकी जीवनशैली कितनी सिम्पल हो गयी है - रहना, खाना, पीना, दृष्टि, वृत्ति, स्मृति सबमें सिम्पल भी हैं तो रॉयल भी हैं। सत्यता की शक्ति सबको उड़ा रही है, कोई मेहनत नहीं है। बाबा की हमारे में बहुत उम्मीदें हैं क्योंकि हम ही सतयुग के स्थापना की नींव हैं, इसके लिये बाबा हर कर्म में सावधानी देता है, कोई भी ऐसा कर्म न हो जो धर्मराज की सजा खानी पड़े। हमारा बाबा कितना रहमदिल है, उसकी दुआ ही दवा का काम करती है लेकिन ऐसी दुआ उनको मिलती है जिन्हें बैलेंस रखना आता है। बाबा के हम बच्चे खुशनसीब हैं क्योंकि पुरानी और पराई कोई बात याद नहीं आती है। सहनशक्ति होने के कारण कभी यह नहीं कह सकते कि आज मेरी मूड खराब है। कोई भी बात मुश्किल नहीं लगती। बाबा की याद में रहकर जो कर्म कर रहे हैं उसका फल बहुत अच्छा है। सतयुग में तो अच्छे कर्मों का फल मिलेगा ही लेकिन अभी भी बहुत अच्छा फल खा रहे हैं।

बोलो, ऐसा ही अनुभव है ना! अभी तो बापदादा की यह सीजन बहुत अच्छी सफल रही, सभी बाबा की दृष्टि से शक्ति भरकर खूब रिफ्रेश होकर गये। अभी फिर वार्षिक मीटिंग तथा सेवाओं के भिन्न-भिन्न कार्यक्रम मधुबन के तीनों स्थानों पर चलते रहेंगे। अच्छा

सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"अतीन्द्रिय सुखमय जीवन का अनुभव करो और कराओ"

1) बाप मिला, सब कुछ मिला, इस स्मृति से अतीन्द्रिय सुखमय जीवन की अनुभूति करते रहो। दु:ख की अविद्या, दु:ख का नाम निशान न रहे। जैसे भविष्य में दु:ख और अशान्ति का अज्ञान होगा, वैसे अभी भी अनुभव करो कि दु:ख अशान्ति की दुनिया ही और है, वह कलियुगी है, हम संगमयुगी हैं। संगमयुग है ही अतिन्द्रिय सुख में रहने का समय, यह अनुभव सतयुग में भी नहीं होगा। तो जैसा समय वैसा लाभ लो।

2) जैसे स्थापना के आदि में एक ओम् की ध्वनि शुरू होती थी तो कितने साक्षात्कार में चले जाते थे, लहर फैल जाती थी। ऐसे अभी अनुभूतियों की लहर फैलाओ। जैसे झरना बह रहा हो तो जो भी झरने के नीचे आयेगा उसको शीतलता का, फ्रेश होने का अनुभव होगा, ऐसे जो भी सभा में आये उसे शान्ति, शक्ति, प्रेम, आनंद, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति हो जाये। इसके लिए आप बच्चे मास्टर शान्ति, शक्ति और सुख के सागर बनो।

3) बाप की याद ही अतीन्द्रिय सुख का झूला है, सदा इस झूले में झूलते रहो। एक बाप दूसरा न कोई - इसी अनुभूति में अतीन्द्रिय सुख समाया हुआ है। इस अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति में मन सदा खुशी में नाचता रहे।

4) सदा अव्यक्ति स्थिति में रहो तो आपके हर कर्म में एक तो अलौकिकता और दूसरा हर कर्म करते कर्मेन्द्रियों से अतीन्द्रिय सुख की महसूसता आयेगी। नयन, चैन, चलन हर वक्त अतीन्द्रिय सुख में रहेंगे। अलौकिकता और अतीन्द्रिय सुख की झलक जब हर कर्म में दिखाई दे तब कहेंगे यह व्यक्त में रहते अव्यक्त स्थिति में स्थित है। मगन अवस्था वाले का यह गुण हर चलन से दिखाई देगा।

5) जो सदा हर्षित रहता है वही आकर्षित करता है। हर्षित का अर्थ है अतीन्द्रिय सुख में झूमना। ज्ञान का सुमिरण करके हर्षित होना। अव्यक्त स्थिति का अनुभव करते अतीन्द्रिय सुख में झूमना, इसको कहा जाता है हर्षित। हर्षित भी मन से और तन से दोनों से होना है।

6) जैसे कोई भी सर्विस करने से तनखाह (पगार) मिलती है, वैसे ईश्वरीय सर्विस करने से क्या तनखाह मिलती है? इससे भविष्य तो बनता ही है लेकिन भविष्य से भी ज्यादा अभी की प्राप्ति है - ईश्वरीय अतीन्द्रिय सुख। यह अतीन्द्रिय सुख सारे कल्प में कभी नहीं मिल सकता। यह बाप द्वारा मिला हुआ ऐसा खजाना है जो एक सेकण्ड में अनुभव कर सकते हो।

7) जैसे धन के भिखारी भिक्षा लेने के लिए आते हैं, वैसे आगे चलकर दिनप्रतिदिन शान्ति वा सुख के अनुभवों के भिखारी आत्मायें भिक्षा लेने के लिए तड़पेंगी। अब सिर्फ एक दु:ख की लहर आयेगी तो जैसे लहरों में लहराती हुई, लहरों में डूबती हुई आत्मा एक तिनके का भी सहारा ढूँढ़ती है, ऐसे आप लोगों के सामने अनेक भिखारी आत्मायें यह भीख मांगने के लिए आयेंगी। तो ऐसी तड़फती हुई प्यासी आत्माओं की प्यास मिटाने के लिए अपने को अतीन्द्रिय सुख वा सर्व शक्तियों से भरपूर करो, जिससे अपनी स्थिति भी कायम रहे और अन्य आत्माओं को भी सम्पन्न बना सको।

8) अतीन्द्रिय सुख मिलने से इन्द्रियों के सुख का जो आकर्षण है वह समाप्त हो जाता है। इन्द्रियों का आकर्षण, सम्बन्धों का आकर्षण वा कोई भी कर्मेन्द्रियों के वश होने से जो भिन्न-भिन्न आकर्षण होते हैं वह अतीन्द्रिय सुख वा हर्ष दिलाने में बन्धन डालते हैं, इसलिए सर्व आकर्षणों से मुक्त रह एक ठिकाने पर बुद्धि को टिकाकर एकरस अवस्था बनाओ।

9) अभी माया के वार से तो सभी निकल चुके हो ना! अगर अभी भी माया का वार होता रहेगा तो फिर अतीन्द्रिय सुखमय जीवन का अनुभव कब करेंगे? राज्य भाग्य का तो भविष्य में अनुभव करेंगे लेकिन अतीन्द्रिय सुख का अनुभव अभी नहीं किया तो कभी नहीं कर सकेंगे। बाप के बच्चे बनकर वर्तमान अतीन्द्रिय सुख का पूरा अनुभव प्राप्त नहीं किया तो क्या किया!

10) सदैव यह सोचो कि संगमयुग का श्रेष्ठ वर्सा अतीन्द्रिय सुख सदाकाल प्राप्त रहा? सदाकाल की प्राप्ति के लिए ही तो बाप के बच्चे बने हो फिर भी अल्पकाल का अनुभव क्यों? अटूट अटल अनुभव होना चाहिए। तब ही अटल अखण्ड स्वराज्य प्राप्त कर सकेंगे।

11) वारिस हो तो वारिस की निशानी है – अतीन्द्रिय सुख के वर्से के अधिकारी। वारिस को बाप सभी कुछ विल करता है, जिनका बाप के विल पर पूरा अधिकार होगा वह विल पावर वाले होंगे। उनका एक-एक संकल्प विल पावर वाला होगा। अगर विल पावर है तो असफलता कभी नहीं होगी।

12) संगमयुग के इस सुहावने समय में अतीन्द्रिय सुख का वर्सा निरन्तर अनुभव करने के लिए रहे हुए हैं, न कि अपनी कमजोरियों के कारण। आप लोगों के लिए यह पुरानी दुनिया जैसे विदेश है। जैसे कई लोग विदेश की चीज़ को टच नहीं करते हैं, समझते हैं अपने देश की चीज़ का प्रयोग करें। ऐसे आप बच्चों को भी इस पुरानी दुनिया अर्थात् विदेशी चीज़ों को टच भी नहीं करना है।

13) अभी जो अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति कर रहे हो इसमें शान्ति और खुशी समाई हुई है। यह है संगमयुग का वर्सा। इस समय की प्राप्ति है अतीन्द्रिय सुख और फुल नॉलेज, फिर यह कभी भी नहीं मिल सकती। सिर्फ साक्षीपन के तख्त पर बैठकर हर कदम में, हर संकल्प में बाप-दादा को सदा साथी अनुभव करो, जितना साथीपन का अनुभव करेंगे उतना ही अचल, अडोल स्थिति में रह अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करेंगे।

14) इस अलौकिक-अतीन्द्रिय सुख वा मनरस स्थिति का अनुभव करने के लिए मन्मनाभव की स्थिति चाहिए। अगर स्वयं ही देह-अभिमान वा देह की दुनिया अर्थात् पुरानी दुनिया की कोई भी वस्तु के रस में फंसे हुए होंगे तो अन्य को मनरस का अनुभव कैसे करा सकेंगे!

15) जितना लास्ट स्टेज़ अर्थात् कर्मातीत स्टेज समीप आती जायेगी उतना आवाज़ से परे शान्त स्वरूप की स्थिति अधिक प्रिय लगेगी, इस स्थिति में सदा अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होगी। इसी अतीन्द्रिय सुखमय स्थिति द्वारा अनेक आत्माओं का सहज ही आह्वान कर सकेंगे। यही पॉवरफुल स्थिति विश्व-कल्याणकारी स्थिति कही जाती है।

16) संगमयुग पर हर कार्य का फल अतीन्द्रिय सुख है, इसके सिवाय अल्पकाल का नाम, मान, शान व प्रकृति दासी का फल स्वीकार किया तो भविष्य खत्म हो जाता है। तो चेक करो यहाँ ही किया, यहाँ ही खाया या जमा भी होता है? जो जैसा और जितना बाप ने कहा है उसका प्रत्यक्ष-फल यहाँ भी लो और भविष्य के लिए जमा भी करो।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 08-01-14 *मधुबन*

"बुद्धि को सतोगुणी बनाओ तो ज्ञान अपने आप धारण होगा, योग भी सहज लग जायेगा"

(दादी जानकी)

सच्चाई, प्रेम और स्नेह यह तीनों बातें दिनप्रतिदिन मेरे को इतनी पक्की होती जा रही है, जो भूलती नहीं हैं। आप कहेंगे स्नेह और प्रेम में क्या फर्क है? रूहानी स्नेह है, बाबा अपने स्नेह से हमको सम्पन्न बना रहा है। पहले गोप-गोपियों का प्रेम है, अतीन्द्रिय सुख है। ईश्वरीय स्नेह आपस में हम एक दो को समीप ले आता है। जितनी समीपता उतना गुणग्राही यानि हरेक के गुणों को देखना, ऑटोमेटिक गुण देखने से जो गुप्त हमारा कोई भी अवगुण है वो चला जाता है क्योंकि मैंने यह प्रैक्टिकल देखा है, अवगुण देखना, सुनना मुख से वर्णन करना यह सबसे बड़ी भूल है।

ज्ञान, योग, धारणा और सेवा चारों ही नम्बरवार हैं। ज्ञान कहता है योगी रहो, योग का प्रैक्टिकल सबूत है धारणा। बाबा ध्यान खिंचवाता है, मनुष्य से देवता बनने की पढ़ाई पढ़ रहे हैं। कहाँ मनुष्य, कहाँ देवतायें? अभी हम कौन हैं? ब्राह्मण सो फरिश्ता। तो भक्तिमार्ग में रसम-रिवाज अनुसार कथा करेंगे तो ब्राह्मण से करायेंगे, श्राद्ध खिलायेंगे तो ब्राह्मण को खिलायेंगे, शादी करेंगे तो ब्राह्मण को बीच में बिठायेंगे, बच्चा पैदा होगा, उसका नाम रखने का प्रोग्राम करेंगे तो उसमें ब्राह्मण को बुलायेंगे। भले देवताओं की पूजा करेंगे, मन्दिर का पुजारी भी ब्राह्मण होगा। तो हम अपनी ब्राह्मण लाइफ को देखें कितनी वण्डरफुल लाइफ है! मुझे लाइफ की सदा ही वैल्यु रही है, पहले हमारे पास कोई शरीर छोड़ता था तो भोग नहीं लगता था, पहले यह सिस्टम नहीं थी।

अलबेलेपन वा लोकलाज के कारण समय को सफल नहीं करते हैं अर्थात् बाबा की आज्ञा नहीं मानते तो अन्त में पश्चाताप करना पड़ता है, इसमें बाबा क्या करेगा? समझदार वो जो ब्राह्मण लाइफ की वैल्यु को ध्यान में रखे। फरिश्ते लाइफ का अनुभव हो। फरिश्ते के पांव धरती पर नहीं हैं क्योंकि कदम कदम पर बाबा को फॉलो करने से पदमों की कमाई होती है, यह प्रैक्टिकल जिसने अनुभव किया है वो हाथ उठाओ, सच्ची। फॉलो फादर। मेरी नज़रों में बाबा के सिवाए कोई न हो तो कितना भाग्य में भाग्य बनता जाता है। भगवान की नज़रों में हैं, भगवान हमारी नज़रों में है। तो कभी कभी लगता है यह जो हमारी नज़रें हैं ना, अनेक आत्माओं को सुख शान्ति देने का काम करेंगी। देवता बनेंगे, कोई बड़ी बात नहीं है, कई बार दिन भर में भान आता है यह लाइफ कितनी अच्छी है! एक दो को देख कितने खुश होते हैं। सतयुग में ऐसे थोड़ेही खुश होंगे! भले समय अनुसार कलियुग जा रहा है, पर संगम पर जो हमको खुशी है वण्डरफुल, संगम की महिमा बहुत है। यह भी ड्रामा अनुसार बाबा ने अपना बनाके क्या से क्या बना दिया है, यह सिमरण करने से कितनी शक्ति

आती है।

नुमाशाम के टाइम बुद्धि को साक्षी होकर देखते हैं, व्यर्थ ख्याल में जा नहीं सकती। शुरू में बाबा कहता था ज्ञान को बुद्धि में धारण करने के लिए सतोगुणी बनो। रजोगुणी नहीं, तमोगुणी तो खराब है पर सतोगुणी बुद्धि में ज्ञान अपने आप धारण होता है। जितना ज्ञान धारण होता है उतना योग अपने आप लगता है। कोई कहता है ना क्या करूँ मेरा योग नहीं लगता। अरे, कारण क्या? कहाँ न कहाँ लगाव झुकाव है। अन्तर्मन से अन्तरिक दिल से बाबा से प्यार नहीं है। प्यार का फायदा नहीं लिया है। बुद्धि योग बल से सतयुगी दुनिया इस सृष्टि पर आ रही है। एक बारी हमने बाबा को कहा था, बाबा इतनी मेहनत करके परमधाम में जायें फिर वहाँ हम थोड़ा समय ही रहें और धर्म वाली आत्मायें तो ज्यादा समय रहेंगी। यह भी हमारा पार्ट है। ख्याल तो होता है इतनी मेहनत की है शान्तिधाम में थोड़ा समय रहेंगे! बाबा कहते ड्रामा। अच्छा, ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास

"किसी के नाम रूप में न फंसना, न किसी को अपने में फंसाना"

ओम् शान्ति बोलने के बाद दिल से मेरा बाबा निकलता है, और कुछ नहीं आता है। मेरा बाबा और बाबा भी हम बच्चों का आवाज़ सुनके कहता है मीठे बच्चे। बाबा को हम बहुत मीठे लगते हैं, क्योंकि सावधानी से पर का चिन्तन छोड़ अपने को देखते हैं।

बेगरी पार्ट में बाबा को एक एप्पल तीन दिन तक खिलाते थे, बड़ा सम्भालके रखते थे, थोड़ा थोड़ा खिलाते थे। बाबा का यह रथ अच्छा सही सलामत रहे। मुझे खुशी है मैं 84 जन्म ही ऐसे बाबा के साथ में होंगी। 84 जन्मों में एक जन्म भी छोडूंगी नहीं। भाग्यवान हूँ, मैं समझती हूँ 10-11 की उम्र में ही बाबा को देखा था, अपने लौकिक बाप से बाबा अच्छा लगता था क्योंकि बाबा से सच्चाई की, अपनेपन की फीलिंग आती थी। हम दोनों (मैं और परदादी) एक क्लास में पढ़ते थे। बृजइन्द्रा दादी को भी पहले से जानती थी। अन्तिम जन्म में भी जो रीयल्टी और रॉयल्टी थी, उसको देख लगता था, यह वो है, वो यह है। तो बाबा को मिलने की खुशी होती है और नशा चढ़ता है।

कईयों की नाम रूप में फंसने की आदत है। बाबा को जरा भी यह पसन्द नहीं है। मैने सदा ध्यान रखा है कि न कोई मेरे नाम रूप में फंसे, न मैं किसी के नाम रूप में फसूं। बाबा कहते बच्ची बाबा मम्मा के भी नाम रूप में नहीं फंसना। कोई विरले भाई बहन होंगे जो किसी के नाम रूप में नहीं फंसें हों। फसेंगे तो फसायेंगे। यह बीमारी कभी भी किसी को नहीं लगे। किसी तरह से भी फंसना नहीं है क्योंकि यह सबसे कड़ी बीमारी है। कोई भी मेरे को याद नहीं करेगा, भले सारी विश्व की बाबा ने सेवा कराई है पर मेरे को याद करता रहे, कोई नहीं करेगा। जो बाबा ने सुनाया है, सिखाया है वो भले याद करे। यह सूक्ष्म बात है कि मेरी कोई महिमा करे, मैं खुश हो जाऊं या मैं अपनी महिमा करूँ।

शुरू में मैं आत्मा हूँ, परमात्मा का बच्चा हूँ... थोड़ा ही ज्ञान सुनाके साइलेंस में बैठ जाते थे, वो साइलेंस में बैठ करके लाइट का अनुभव करते थे। शान्ति अच्छी लगती थी, प्रेम अच्छा लगता था। जो बाबा ने सुनाया है वही वर्ड बाय वर्ड सुनाते थे। वन्डर था बाबा रोज़ नई नई बातें सुनाता था, हम सुनते जाते थे। भगवान स्वयं मुख से बोले, हम सुनें और लिखें यानि हम ब्राह्मणों की लाइफ कितनी ऊंची है! ब्रह्मा मुख से पैदा हुए हैं, उनके मुख से ज्ञान सुना है और जब से बाबा के बने हैं, ब्रह्मा भोजन खाया है। तो कभी बैठके देखो, कितना बड़ा भाग्य है। मेरा बाबा साथी और बाबा ने फिर सिखाया है बन जाओ साक्षी। दिन-रात मैं तो स्वप्नों में भी साक्षी हो करके देखती हूँ।

सारे ईश्वरीय परिवार में और कुछ न करें, आत्म अभिमानी हो करके रहने की स्मृति हो, बाबा मेरा साथी है, यह अनुभव हो। एक मिनट, एक सेकेण्ड भी यह फीलिंग नहीं है मैं आत्मा अकेली हूँ, देह से भी न्यारी हूँ, मीठे बाबा ने जनक नाम से पक्का करा लिया ट्रस्टी और विदेही। ट्रस्टीपने में जरा भी कभी मैं नहीं समझती हूँ कोई ध्यान रखा यह मेरा है, सेन्टर मेरा है, स्टूडेन्ट मेरा है। मेरा कोई नहीं है। मैं मेरा से फ्री हूँ। मैंने यह काम किया, यह भी नहीं कह सकते हैं, मैंने क्या किया है? हाँ, इतना जरुर है एक बल एक भरोसा, निश्चय बुद्धि विजयंती, बना हुआ था सो हुआ। सिर्फ संकल्प आया यह होना चाहिए, हुआ, हो गया। बाबा ने किया फिर कराया इसमें सिर्फ मेरी भावना रही। भावना से सारी विश्व की सेवा हो रही है।

"बाबा की माइट लाइट बना रही है, लाइट बनकर माइट खींच रहे हैं इसी चिंतन से बुद्धि को शुद्ध और श्रेष्ठ बना रहे हैं"

बाबा कहते हैं बच्चे भाई भाई की दृष्टि महा सुखकारी होती है। हम आत्मायें जब भाई भाई हैं तो नेचुरल ऑटोमेटिक बाबा की याद और घर की यात्रा पर होते हैं। ब्रह्माबाबा से दृष्टि ले रहे हैं वो आया है इसमें, यहाँ ही बैठा है। बाबा कितना छोटा है, भले मन्दिरों में ज्योर्तिलिंगम् के रूप में बड़ा दिखाया है, पर इतना बड़ा नहीं है। इतना बड़ा होता तो यहाँ (भ्रकुटी में) इतना बड़ा बड़ा गोला निकल आता। इसके बाजू में बैठा है, है छोटा-सा, वण्डर तो यह था कैमरे वाले फोटो निकाले तो बाबा यहाँ लाइट लाइट दिखाई पड़ता था। तो मुझे बड़ा अन्दर से आता है, जो हम लोगों ने अनुभव किया है वो यह भी अनुभव करें, बाबा को ऐसे यहाँ देखें। दोनों इकट्ठे दिखाई पड़ते हैं। यह बातें मन में चिंतन में मंथन करने में बड़ा मज़ा आता है। कहाँ बैठे हैं? किसके सामने बैठे हैं? कौन आया है? कहाँ आया है? आते ही क्या किया है...।

यह संगमयुग की वण्डरफुल घड़ियां हैं। जब जगदीश भाई ज्ञान में आया तो बहुत क्वेश्चन्स पूछता था, रोज सुबह 5 बजे सोनीपत से आ जाता था। एक दिन मैंने कहा तुम इतना पूछेगा तो मैं नहीं बता सकेंगी, इसलिए बुद्धि को शान्त कर, तो बिचारे ने अजब खाया! शान्त रहेंगे तो अनुभव करेंगे तो शान्त हो गया। फिर मैंने बाबा को लिखा, बाबा यह बालक है अच्छा क्योंकि हमारे अन्दर था, ऐसा कोई समझदार बच्चा हो बाबा का, जो बाबा सुनाता है वो लिखे, समझे। फिर जब बाबा से मिला, अनुभव किया कि परमात्मा कौन है तो समझ गया। सिर्फ बातें करने से अनुभव नहीं होता है। जितना शान्त रहो ना तो शक्ति आती है।

जैसे लाइट हाउस ऊपर से सबको रास्ता बताता है। माइट लाइट बना रही है, लाइट बनके माइट खींच रहे हैं। माइट लाइट बना रही है और लाइट माइट खींच रही है। ऐसे जो बाबा के अच्छे अच्छे बोल हैं, चिंतन को शुद्ध और श्रेष्ठ बनाते हैं और कोई चिंतन वा ख्याल नहीं है। बोलने आता नहीं है। सुनने में मजा नहीं आता तो क्या बोलें! ऐसी कोई विधि हो, जो मेरा दिल कहता है, बाबा के बच्चे जो हैं ना, जिसको जो देखे खुश हो जाये, मजा आ जाये। बाबा ने कहा यह खातिरी करो एक दो को खुशी देने की क्योंकि खुशी खुराक है। पुराने जमाने में हमने तो यह देखा है मेहमान की खातिरी कैसे की जाती है। जो आया ज्ञान सुनाया, खातिरी किया वो अपना बन गया, मैंने कभी किसी को 7 दिन का कोर्स फोर्स से नहीं कराया होगा, परन्तु कुछ खिलाया होगा। टाइम और मनी का कदर रहा है, पहले ज्ञान इतना बड़ा नहीं था, पर वो बाबा के पास आया, बाबा का न बनें, यह कभीं नहीं हुआ।

शुरू शुरू में यह गीत, टेप रिकार्ड भी नहीं थे। ग्रामोफोन था उसी में गीत बजाते थे, तब बाबा का फोटो भी नहीं रखते थे क्योंकि बाबा की मना थी। योग शब्द नहीं कहते थे, शान्त में बैठ जाते थे, मुरली भी आज की तरह नहीं होती थी जो पढ़के सुनावे, परन्तु अन्दर से भावना ऐसी थी, आत्मा अच्छी है, शान्त में बैठी है, वायुमण्डल बहुत पॉवरफुल, तब भोग आदि लगाने का भी रिवाज़ नहीं था, पर बाबा की याद में प्यार से बनाके खिलाते थे। तो खाने वाले खाके कहते थे, इतना प्यार कभी किसी ने नहीं किया है। अभी किसी को बाबा का ऐसा बच्चा बनाने कि लिए वा ऐसा खास विशेष अनुभव करने कराने के लिए वातावरण बनाना पड़ता है। पहले वातावरण बहुत अच्छा होता था क्योंकि कुछ और तो होता नहीं था। एक बारी छोटे हॉल में लक्ष्मी-नारायण के फोटो की तरफ दिखाते इशारे करते बाबा ने कहा तुमको यह बनना है तो जाओ इन चित्रों के सामने बैठ जाओ। गोले का चित्र बना तब भी कहा जाओ बच्ची चित्रों के सामने जाके बैठ जाओ, अच्छा लगता था। फिर मैं पुणे में थी तो मुझे था बाबा ने यह जो बड़े चित्र बनवाये हैं, अगर यह मेरे पास होते तो मैं सेवा करती। तो बाबा ने उसी साइज़ का बड़ा चित्र बनवा के भेजा और कहा चित्रों के ऊपर लिख दो अन्धों की आँखें खोलने वाले यह चित्र हैं।

तो बाबा जैसे समझाता है, ऐसे मुझे दूसरों को समझाना है। फिर विष्णु जैसा बनना है, शंकर मिसल अशरीरी रहना है। ब्रह्मा बैठा है, इसमें वह विराजमान है। यह समझना समझाना कोई बड़ी बात नहीं है, पर बुद्धि कोई ठिक्कर भित्तर में न हो। चमड़ी दमड़ी, रूप रूपय्या में बुद्धि न हो तो ज्ञान समझाना कोई बड़ी बात नहीं। थोड़ा ज्ञान समझाते हैं तो वो समझते हैं मैं बहुत अच्छा समझा सकता हूँ। ज्ञान योग बहुत सहज है, परन्तु खिटपिटी, अटपटी, चटपटी बातें बुद्धि में होती है तो फिर मुश्किल लगता है। ऐसे शान्त, प्रेम, आनन्द में रहने वाले, परमानन्द में रहने वाली आत्मा को बाबा देख खुश होता है। बच्चे फिर बाबा को देख खुश होते हैं। बाबा ने कैसे अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया। अच्छा, ओम् शान्ति।

खुशनसीब वह हैं जो सदा खुशी की खुराक खाते और खिलाते हैं"

गुल्जार दादी जी का क्लास)

बाबा ने हम सबको कितनी खुशी दी है, सदा इसी खुशी में झूमते रहो। खुशी की अनुभूति में खो जाओ। इस दुनिया में सबसे खुशनसीब हम ही हैं। बाबा ने इतनी खुशी की खुराक दी है जो खाते रहो और खिलाते रहो। खुशी गंवाओ नहीं, बातें तो होगी लेकिन बातें खुशी न ले जाएं। खुशी हमारी चीज़ है। सदा नशा रहे कि हम भगवान के बच्चे हैं, साधारण नहीं। अगर कोई पूछे आपका बाप कौन है? तो खुशी से वर्णन करेंगे। सदा इसी खुशी में उड़ते रहो। चेक करो शुरू से लेकर बाबा ने हमें कितने खज़ाने दिए हैं। यही सिमरण करते रहो। कितना भी बिजी रहो लेकिन हमारी खुशी हमारे साथ रहे। भगवान हमारा बाप होगा, यह कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। हमारा ड्रामा में भाग्य था जो बाबा के पास पहुँच गये। बाबा के घर में रहते हैं, खाते हैं, यह कभी भूल नहीं सकता। अपनी चेकिंग करो कि दिन तो बीता लेकिन किसके साथ रहते हैं? कौन हमारी परवरिश कर रहा है? बहनें या बाबा। भगवान के लिए क्या सोचते और सुनते थे लेकिन वह हमारा हो गया, ये नशा रहे। भगवान हमारा बाप है जो प्रैक्टिकल में हमारी पालना कर रहा है। बाबा हमारा साथी है। बाबा कहने से कितनी खुशी होती है। ऋषि मुनि भी चाहते हैं भगवान हमें दिखायी दे, महसूस हो लेकिन वह हमारा बन गया। जितना बाबा में मेरापन लायेंगे तो खुशी और शक्ति मिलती रहेगी। बस बाबा में खो जाओ। भगवान के साथ रहने वालों का गायन है। बाबा के साथ हमारा पार्ट है। बाबा सवेरे-सवेरे उठाता है। हरेक के दिल से निकलता है मेरा बाबा। बाबा के सिवाए हमारा है ही कौन। बाबा ने गैरन्टी की है हमारी आज्ञा पर चलेंगे तो क्या से क्या बना दूँगा। संगम पर साधारण पार्ट है लेकिन खुशी कितनी है और चाहिए ही क्या। भले कामकाज करते हैं लेकिन नशा क्या रहता है भगवान मेरा हो गया। स्वप्न में भी नहीं था कि इतने बड़े बाबा के साथ जाकर रहेंगे। बाबा ने हमारे लिए कितना अच्छा यह ओआरसी बनाया है। लोग भगवान के लिए क्या-क्या करते हैं लेकिन वह हमारा हो गया। बाबा मेरा है, ऐसे नहीं बहनों का ज्यादा है पहले मेरा है। अरे, जिसको इतना समय याद करते थे वह हमारा हो गया कितनी खुशी की बात है। अनुभव भी होता है वह मेरा है। सैलवेशन भी बाबा देता है, यज्ञ भी उसने रचा है। हमसे कोई पूछे आपको कौन चला रहा है? भले बहनें निमित्त हैं लेकिन बाबा चला रहा है। जिसे दुनिया पुकार रही है वह हमारा हो गया। हमारे दिल से क्या निकलता है - मेरा बाबा। इसी खुशी और खुमारी में हमारे रात-दिन बीतते हैं। कभी ऐसा समझा था कि हम भगवान के साथ रहेंगे? बाबा कौन है? बाबा कहने से सब सामने आ जाता है। ऐसे कभी समझा था कि भगवान के साथ रहेंगे, खायेंगे यह कम थोड़ेही है। जो अपने भाग्य का लाभ उठाते चलते रहते हैं उनकी निशानी सदा खुशनसीब की होगी। जब हम छोटे थे तो इतना नशा था जो कहते थे जो हमारी शक्ल देखेगा खुश हो जायेगा। क्योंकि हम भगवान के घर में रहते हैं। वह हमारा बाप है। बाबा का परिचय याद रहने से भी खुशी होती है। बातें तो संगठन में आयेगी क्योंकि संगठन में हम भी रहे हैं। सारी दुनिया पड़ी है लेकिन भगवान ने मुझे निमंत्रण देकर बुलाया है, रिवाजी थोड़े हैं लेकिन भगवान ने मुझे निमंत्रण देकर बुलाया है। भगवान ने मुझे स्वीकार किया है। दुनिया में क्या लगा पड़ा है और हम मज़े में रहते हैं। बाबा हमारे साथ है। सवेरे भगवान से गुडमार्निंग करते हैं यह अपना भाग्य देख खुशी होती है। दुनिया में कितने कुमार हैं लेकिन बाबा ने हमें अपने घर में रहने का चांस दिया है। थोड़ी खिटपिट तो होती है यह भी पेपर है जिसमें पास होना है। पास होकर कहाँ जायेंगे? ब्रह्माबाबा के साथ सतयुग में। कहाँ थे कहाँ पहुँच गये, इस अपने भाग्य की स्मृति रहती है? हमारे जैसा खुश कोई और हो ही नहीं सकता। वहाँ अगर दुनिया में होते तो बीमारियाँ आती। हमको बाबा ने ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी बनाया है, बस यही गायन करते रहो। हमारे पर बाबा की नज़र गई। कोई भी बात हो लेकिन शक्ल न बदले क्या करूँ, कैसे करूँ, बाबा मेरे साथ है यह स्मृति में रखो। भगवान के घर में आये हैं अगर यहाँ खुशी नहीं मिलेगी तो कहाँ मिलेगी। बाबा की पालना में पल रहे हो यह भाग्य कम नहीं। आपके भाग्य को देख और भी खुश होते हैं, हरेक को यहाँ रहने का चांस नहीं। दुनिया भगवान के लिए तड़फती है और आप उसके साथ रहते हो। ड्रामा ने और बाबा ने मंजूर किया है जो आपको यहाँ रहने का भाग्य मिला। भागवत पढ़कर आँखों में आँसू आते हैं वह आपका ही यादगार है जो भगवान के साथ रहते हो। सब बातें खत्म कर दिल में दिलाराम को बिठा लो। खुशी कभी नहीं गंवाना। अच्छा ओम शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

संगमयुग पर हम सबका लक्ष्य है – ब्राह्मण सो फरिश्ता सो देवता बनना। तो हमारी सम्पूर्णता के समीपता की स्थिति है - पहले हम अपने को फरिश्ता बनावें। फरिश्ता अर्थात् जो इस देह और देह के बन्धन हैं, उन बन्धनों से मुक्त। जो भी पुराने संस्कार-स्वभाव हैं, दृष्टि वृत्ति है, वह सब हमारी परिवर्तन हो जाए। तो इन सबमें कितने परसेन्ट परिवर्तन हुआ है, मास्टर बन खुद ही खुद को चेक करें क्योंकि यह पुराने स्वभाव-संस्कार ही हमारे बन्धन हैं और उन्हें परिवर्तन करना उसको ही कहेंगे बन्धनमुक्त अर्थात् जीवनमुक्त बनना। तो सबसे पहले खुद से पूछना हैं कि सचमुच इस जीवन में मैं आत्मा सब सूक्ष्म वा स्थूल बन्धनों से स्वतंत्र हूँ? मुक्त हूँ या मेरे संस्कार-स्वभाव जंजीर की तरह बन्धन में रखते हैं? जरा भी कोई बन्धन होगा तो कभी भी अतीन्द्रिय सुख का अनुभव नहीं होगा। जो खुशी होनी चाहिए वह कम हो जायेगी। तो बन्धनमुक्त की निशानी है अतीन्द्रिय सुख। और अतीन्द्रिय सुख में हैं तो जीवनमुक्त स्थिति है। तो अपने से पूछो मैं एवरहैपी हूँ? जो बाबा कहते हैं ''सम्पन्न फरिश्ता भव'' उसका मैं कहाँ तक खुद में अनुभव करता/करती हूँ?

दूसरा - अगर लक्ष्य है कि मैं सम्पन्न फरिश्ता बनूं तो लक्ष्य प्रमाण लक्षण धारण किये हैं! ज्ञान के जो भी गुह्य राज़ हैं, उन्हें समझकर कर्म-अकर्म और विकर्म की गुह्य गति को जानकर श्रेष्ठ कर्म करते हैं? विकर्मों को खत्म कर मैं दिनोंदिन अकर्मी बनती जा रही हूँ? जो संस्कार कर्मों का खाता बनाते, मैं उन संस्कारों को, कर्मों के हिसाब-किताब को भस्म कर अकर्मी बनती जा रही हूँ? कोई भी संस्कार के वश कर्म होता तो वह अकर्म नहीं बनता, परन्तु कभी कर्म, कभी विकर्म हो जाता। जिसको कहा जाता मायाजीत नहीं परन्तु माया के वश हो गया। फिर वृत्ति जाती, इच्छा होती, पुराने व्यर्थ संकल्प चलते, देह-अभिमान होता। अनेक प्रकारों के मान, शान आदि का स्वार्थ होता। अब मैं इन सभी से मुक्त बनूँ, उसके लिये अपने पास्ट कर्मों को भस्म करना है, अब ऐसा कोई कर्म न हो जो फिर कोई कर्म का खाता बनें। जिसके लिये बाबा कहते कोई विकर्म करेंगे तो सज़ा खानी पड़ेगी। तो हम अपनी ऐसी सम्पन्न स्थिति बनावें, मुक्त बनें जिससे विथ ऑनर पास हों।

जैसे पढ़ाई में कोई तो 90, 95 मार्क्स लेते, कोई 75, 50 भी लेते। कोई फिर 33 मार्क्स लेकर पास हो जाते। तो वह जैसे खींच करके पास होते। उन्हें फुल पास नहीं कहा जाता। तो लौकिक पढ़ाई में ऐसे होता है परन्तु यहाँ हमें तो पास होना है, यह नहीं कि हम 75 मार्क्स से पास हुए, हमें पास मार्क्स कम से कम 95 से 100 के बीच लेनी है। बाबा से हमें फुल वर्सा लेना है, फुल मार्क्स लेनी हैं। उस फुल मार्क्स को कहा जाता है - सम्पन्नता। अगर कोई कड़ा हिसाब भी है तो भी उसको हमें अपने ज्ञान योग के बल से भस्म करने की मेहनत करनी है।

कई कहते हैं मैं सच कहती हूँ कि मेरे में सहन करने की शक्ति नहीं है। ऐसा कहकर डनलप का तकिया नहीं देना है। हमें मेहनत करनी है, कोई भी शक्ति की कमी है, तो उसको योगबल से फुल करो। हम नई दुनिया का निर्माण करने वाले कहें, मेरा नाम तो है निर्माण करने वाली परन्तु मैं तो मान, शान की भूखी हूँ, तो वह क्या निर्माण करेंगी! इसलिये सम्पन्न बनने के लिये हमारा अटेन्शन चाहिए कर्म विकर्म अकर्म की गुह्य गति पर, जो कोई भी हमारे से अब विकर्म तो नहीं परन्तु कर्म का खाता भी न बने। और बने हुए कर्मों के खाते को भस्म करें, अकर्मी बनें। तब ही सच्ची जीवनमुक्ति का अनुभव होगा और नशा रहेगा कि हम कौन हैं? क्या हैं?

जब हम सम्पन्नता का सोचते हैं तो हमारा अटेन्शन जाता, सम्पन्न बनना अर्थात् कर्मातीत बनना। तो हम सम्पन्न बनें अर्थात् बाप समान बनें, कर्मातीत बनें। तो हमारे पुरुषार्थ का अन्तिम पेपर है भी कर्मातीत बनना। तो कर्मातीत बन रहे हैं या कोई सूक्ष्म और भी कर्म के खाते तो नहीं बन रहे हैं? अगर संकल्प व्यर्थ जाते तो क्या वह व्यर्थ संकल्प हमें कर्मातीत बनायेगा? व्यर्थ संकल्प कर्मातीत तो नहीं बनायेगा बल्कि समय भी वेस्ट, संकल्प भी वेस्ट तो श्वांस भी वेस्ट, शक्ति (एनर्जी) भी वेस्ट। कई बार हम अपने व्यर्थ संकल्पों के प्रति इतना अटेन्शन नहीं देते, ऐसे ही अपनी शक्ति को नष्ट करते हैं। तो ध्यान रखना है कि हमारी दिनचर्या में किसी प्रकार का भी स्वयं के प्रति अथवा दूसरों के प्रति व्यर्थ संकल्प न चले। हम आये हैं स्वयं की गति सद्गति करने, तो हमारा दूसरों के पीछे समय क्यों वेस्ट हो, इसलिए न श्वांस वेस्ट करो, न समय, न संकल्प। बाबा ने हम सबको टाइटल दिया है सर्व के शुभचिंतक। तो सबके प्रति शुभ भावना रखो, शुभ सोचो, कल्याण की भावना रखो।

अगर कारणे अकारणे कोई भी कुछ करता उसके लिये भी हमारा संकल्प चलता, तो उसमें भी हमारी एनर्जी वेस्ट जाती। तो अब बाबा ने हम सबको सम्पन्नता का इशारा दिया है इसलिए

कोई भी संकल्प व्यर्थ नहीं होना चाहिए। हरेक का ड्रामा में अपना-अपना पार्ट है, हमें हर बात के पीछे शुभ सोचना है और शुभ भावना रख कार्य-व्यवहार में भी शुभ वृत्ति को अपनाना है। शुभ भावना ही हमारी मुख्य सेवा है। और सेवा न भी करें, शुभ भावना रखें तो भी चारों तरफ अच्छे वायब्रेशन फैलते रहेंगे। कोई मिले, कोई आवे जावे, उनके लिये शुभ भावना, शुभ कामना देना अर्थात् सूक्ष्म दुआयें देना जिसको बाबा ने कहा है दुआ देना अर्थात् दाता बनना। तो हमें दाता बनके दुआयें देनी और लेनी हैं। दुआयें सिर्फ देनी नहीं होती परन्तु रिटर्न में दुआयें आटोमेटिक मिलती हैं। अगर कोई प्रैक्टिकल हमसे अनुभव पूछे तो मैं कहती कि बाबा ने मुझे दुआओं में पाला है और दुआओं से आगे बढ़ाया है। हमें सबकी दुआयें मिलती इससे बड़ा और क्या वरदान है। दुआयें ही वरदान हैं। उन दुआओं का आधार है सदा सर्व के लिये शुभ सोचना। और शुभ सोचने वाले में ''मैं मैं मैं'' नहीं रहती। आप आप आप। मैं, मैं करने से दुआ के बदले दूसरों से बद्दुआ मिलती, शुभ भावना से आप आप करो तो दुआयें मिल जाती। तो हम हैं दाता के बच्चे, हमें देना है न कि लेना है। सब देना सीखो, देने में स्वत: मिल जाता माना लेना होता है।

बाबा ने हमें पहला मन्त्र दिया है - निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी बनो। यही अन्तिम महावाक्य याद रखो तो सम्पन्न बन विजय माला के रत्न बन जायेंगे। हमें बाबा के गले का विजयी रत्न बनना है इसलिए सम्पन्नता माना विथ ऑनर्स पास होना अर्थात् कर्मातीत बनना। तो मैं मन, वचन, कर्म से, दृष्टि वृत्ति से बाप के समान कल्याणकारी हूँ? हमारे सामने साकार बाबा एक्जाम्पुल है। तो बाबा को फालो करते करते हम बाबा के समान फरिश्ता बनेंगे। तो यह सम्पन्नता की स्थिति का पुरुषार्थ करने से जो कभी कभी उदासी या टेन्शन आदि होता, वह सब खत्म हो जायेगा। कई बार बाबा हमें समय की सूचना देते कि बच्चे समय को देखते हो, तो तुमको बेहद का वैरागी अथवा उपराम रहना है। जितना बेहद के वैरागी, त्यागी बनेंगे अर्थात् उपराम रहेंगे, उतना आटोमेटिकली हमारी याद की यात्रा पावरफुल होती जायेगी। यह अशरीरी बनने का अभ्यास सम्पन्न बनने में हमें बहुत मदद करता है इसलिए भिन्न-भिन्न बाबा ने युक्तियाँ दी हैं, प्वाइन्ट्स दिया है। हाँ, मेहनत तो जरुर लगती क्योंकि आखिर 63 जन्मों के संस्कार हैं। परन्तु अगर आप सोचेंगे बड़ा मुश्किल है तो पास ही नहीं हो पायेंगे। अगर फेथ है कि हम पास ही होंगे जरूर, बाबा को हम अपना ऐसा चार्ट दिखायेंगे तो सहज हो जायेगा।

और मैं समझती कि बाबा ने फर्स्ट टाइम यह 6 मास का टाइम बांधके दिया है। मैंने नही समझा कि बाबा ऐसे 6 मास का टाइम देगा। हमें तो वन्डर लगा बाबा, आप तो सब बच्चों को उड़ती कला का वरदान देके उड़ाके ले जाना चाहते। उड़ने के बिना, अब पैदल करने की बात खत्म। उड़ो, उड़ाओ, उड़ते चलो बस। अभी पैदल, मेहनत से नहीं चलना है परन्तु उड़ती कला में उड़के जाना है। जब उड़ती कला में उड़ेंगे तब ही सम्पन्नता के समीप सहज आयेंगे। जब प्लेन उड़ जाता तो बाकी सब नीचे रह जाते। बादलों से भी पार हो जाते। तो हमें सब बातों रूपी बादलों से पार जाना है, यह सम्पन्नता अर्थात् उड़ती कला में उड़ने का इशारा है। उड़ना है, उड़ाना है और पार जाना है।

अभी हमें सम्पन्न बनना है, समय को समीप लाना है। जब सम्पन्नता के समीप आयेंगे तब बाप की प्रत्यक्षता होगी। तो बाबा को हम थैंक्स कहें जो बाबा हम बच्चों में इतना बल भरता, हिम्मत देता तो क्यों नहीं फिर कहेंगे कि बाबा हम अपनी हिम्मत से, आपकी मदद से आपसमान फरिश्ता बनेंगे, सम्पन्न बनेंगे। तो अब की बार हरेक अपनी डायरी में सवेरे-सवेरे सम्पन्नता की विशेष कोई ना कोई प्वाइन्ट नोट करेंगे, याद करेंगे।

ऐसी गुड रिपोर्ट चारों तरफ से आती जायेगी तो हम भी बाबा को कहेंगे अभी आप फिर ऊपर से नीचे आओ आके सभी को इनाम दो। कोई फर्स्ट आता है तो उनको इनाम तो मिलता है, तो फर्स्ट नम्बर आओ बाबा से इनाम लो। जब बाबा बच्चों की ऐसी स्थिति देखेंगे तो इनाम देने लिये कोई सेरीमनी करेंगे। लेकिन पहले अपनी ऐसी अपार खुशी की, आनन्द की स्थिति बनाना। और देखा जाता है कि सम्पन्न होने की सहज विधि अगर पूछो तो हर कदम, हर संकल्प, हर बात में मैं श्रीमत पर चलूं। श्रीमत है हमारी लाईन। बॉर्डर लाइन मिलती है ना। तो श्रीमत है हमारे को कदम बाय कदम आगे बढ़ने के इशारे। यह श्रीमत अनुसार चली, यह श्रीमत अनुसार सोचा? श्रीमत अनुसार सेवा की? यह धारणा हो, यह स्वरूप हो... इसकी सब श्रीमत मिली हुई है। जैसे श्रीमत है कि अपनी मस्ती में रहो, कभी मूंझो नहीं। अगर मूंझते हो तो क्या यह श्रीमत हुई? नहीं। हमें श्रीमत को सामने रखना है तो सहज सम्पन्न हो जायेंगे क्योंकि श्रीमत में ही दुआयें हैं, यही आज्ञायें हैं। उसमें चलने से अपनी स्थिति बहुत अच्छी बेफिक्र वाली बन जाती है। बेफिक्र बादशाह बन जाते हैं। तो बाबा ने हम सबको अपनी स्थिति सम्पन्न बनाने के लिये जो इशारे दिये हैं उस अनुसार पुरुषार्थ कर हम भी बाबा से 100 परसेन्ट मार्क्स लेने का अधिकार रखेंगे। हो सकता है?

बाबा के सामने इतनी प्यारी न्यारी स्थिति का अनुभव करते रहेंगे। तो बस, न कोई लोभ हो, न मोह हो, न ममता हो, न टेन्शन हो, न व्यर्थ संकल्प हो, न व्यर्थ टाइम हो। न मेरा तेरा हो, न उदासी हो.... यह सब मधुबन में स्वाहा करके जाओ। अच्छा - ओम् शान्ति।